श्रीः

चपला

वा

नव्यसमाजचित्र

रहस्यपूर्ण

सामाजिक उपन्यास.

पहिला भाग ।

श्रीकिशोरीलालगोस्वामिलिखित.

" यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणङ्कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते ॥"
(श्रीभगवद्गीता)

[सर्वाधिकार रक्षित.]

श्रीछबीलेलालगोस्वामि-द्वारा
श्रीसुदर्शनप्रेस वृन्दावन में मुद्रित और प्रकाशित
दूसरीबार १०००) सन १९१६ ईस्वी. (मूल्य दस आने